शुद्धिकरण का सोता: एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण

शुद्धिकरण का सोता यीशु मसीह के लहू को संदर्भित करता है, जो विश्वासियों के जीवन में बपतिस्मा के माध्यम से प्रभावी होता है। जैसे पुराने नियम में शुद्धिकरण के जल का उपयोग धार्मिक अशुद्धता से शुद्ध करने के लिए किया जाता था, वैसे ही नए नियम में बपतिस्मा का जल पाप से आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

पुराने नियम में शुद्धिकरण

पुराने नियम में धार्मिक नियमों द्वारा शुद्धता निर्धारित की जाती थी। यदि कोई मृत शरीर को छूता था, तो वह अशुद्ध हो जाता था और उसे परमेश्वर की उपस्थिति में आने से पहले शुद्धिकरण की विधि से गुजरना पड़ता था।

गिनती 19:11–13 (NIV):
“जो कोई मनुष्य के शव को छूए, वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगा।
उसे तीसरे और सातवें दिन जल से शुद्ध होना होगा; तब वह शुद्ध होगा। यदि वह तीसरे दिन शुद्ध न हो, तो सातवें दिन भी शुद्ध नहीं होगा। जो कोई मनुष्य के शव को बिना शुद्ध हुए छूता है, वह यहोवा के तम्बू को अशुद्ध करता है; वह व्यक्ति इस्राएल से काटा जाएगा क्योंकि उसने शुद्धिकरण के जल को तुच्छ जाना है; वह अशुद्ध है, और उसकी अशुद्धता उस पर बनी रहती है।”

शुद्धिकरण का सोता: एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण

शुद्ध होने से इनकार करने पर गंभीर परिणाम होते थे:

गिनती 19:20 (ESV):
“जो कोई अशुद्ध है और अपने आप को शुद्ध नहीं करता, वह सभा से
अलग कर दिया जाएगा, क्योंकि उसने यहोवा के मण्डप को अशुद्ध
किया है। उस पर शुद्धिकरण का जल नहीं छिड़का गया है; वह अशुद्ध बना रहता है।”

ये पुराने नियम की व्यवस्थाएँ प्रतीकात्मक थीं, जो यीशु मसीह के द्वारा होने वाले अंतिम और पूर्ण शुद्धिकरण की ओर संकेत करती थीं।

नए नियम में शुद्धिकरण

नए नियम में, जो लोग अपने जीवन को यीशु मसीह को नहीं समर्पित करते—वे परमेश्वर की दृष्टि में अशुद्ध हैं। पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है, जिससे उसकी आराधना या निकटता अस्वीकार्य हो जाती है।

यहेजकेल 14:3–4 (NASB):

शुद्धिकरण का सोता: एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण

“मनुष्य के पुत्र, इन लोगों ने अपने हृदयों में मूर्तियाँ स्थापित कर ली हैं और अपने मुखों के सामने अधर्म के ठोकर-पत्थर रख लिए हैं। क्या मुझे ऐसे लोगों से परामर्श करना चाहिए? इसलिए उनसे कह, ‘प्रभु यहोवा यों कहता है: इस्राएल के प्रत्येक व्यक्ति जो अपने हृदय में मूर्तियाँ स्थापित करता
है और अधर्म के ठोकर-पत्थर अपने सामने रखता है और भविष्यद्वक्ता के पास आता है — मैं यहोवा उसे उसकी मूर्तियों की बहुतायत के अनुसार उत्तर दूँगा।’”

पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर के समीप नहीं आ सकता और न ही स्वीकार्य आराधना कर सकता है।

व्यवस्थाविवरण 23:18 (KJV):
“तू वेश्या की कमाई या कुत्ते की कीमत को अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में किसी मन्नत के लिये न लाना; क्योंकि यहोवा तेरे परमेश्वर के लिये दोनों ही घृणित हैं।”

पाप ही अशुद्ध करता है।

मरकुस 7:21–23 (ESV):

शुद्धिकरण का सोता: एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण

“क्योंकि भीतर से, मनुष्य के हृदय से, बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार, लालच, दुष्टता, छल, लज्जा, डाह,
निन्दा, घमण्ड, और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें
भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।”

इस प्रकार, पाप ही अशुद्धता का स्रोत है। जो लोग पाप में जीते हैं—even यदि वे बाहर से धार्मिक प्रतीत हों—वे परमेश्वर के पास नहीं आ सकते। उनके प्रार्थनाएँ भी व्यर्थ हो सकती हैं क्योंकि उनका हृदय अशुद्ध है।

यशायाह 59:1–3 (NIV):
“निश्चय ही यहोवा का हाथ बचाने के लिये छोटा नहीं, न उसका
कान सुनने के लिये बहिरा है। परन्तु तुम्हारे अधर्म ने तुम्हें अपने परमेश्वर से अलग कर दिया है; तुम्हारे पापों ने उसका मुख तुमसे छिपा लिया है, जिससे वह न सुने। क्योंकि तुम्हारे हाथों पर लहू के दाग हैं, तुम्हारी उँगलियों पर अधर्म है; तुम्हारे होंठ झूठ बोलते हैं, और तुम्हारी जीभ कुटिलता बकती है।”

यीशु के लहू की शुद्ध करने की शक्ति

शुद्धिकरण का सोता: एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण

जहाँ पुराने नियम में शुद्धिकरण बाहरी और रीति-संस्कारों द्वारा होता था, वहीं नए नियम में शुद्धिकरण आत्मिक और शाश्वत है। यह यीशु के लहू के द्वारा पूरा होता है और बपतिस्मा के माध्यम से प्रतीकित होता है।

रोमियों 6:3–4 (NIV):
“क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जो मसीह यीशु में बपतिस्मा
लिये गए, उसके मृत्यु में बपतिस्मा लिये गए? सो हम बपतिस्मा
के द्वारा मृत्यु में उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह
पिता की महिमा से मरे हुओं में से जी उठे, वैसे ही हम भी नये जीवन में चलें।”

बपतिस्मा में बाहरी रूप से तो जल में डुबकी लगाई जाती है, पर आत्मिक रूप से व्यक्ति यीशु के लहू के सोते में प्रवेश करता है, जो सब पापों को धो देता है।

प्रेरितों के काम 2:38 (KJV):
“तब पतरस ने उनसे कहा, ‘मन फिराओ, और तुम में से हर एक यीशु
मसीह के नाम से पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लो, तो तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।’”

बपतिस्मा और मन-परिवर्तन साथ मिलकर यह दर्शाते हैं:

मन फिराना (Repentance): पाप से हृदयपूर्वक मुड़ना, अपने अपराधों को स्वीकारना, और आज्ञाकारिता का संकल्प लेना।

पूर्ण डुबकी द्वारा बपतिस्मा: पानी में पूर्ण डुबकी लगाना, जो मसीह के साथ गाड़े जाने और उसके लहू से शुद्ध होने का प्रतीक है।

शुद्धिकरण के सोते में प्रवेश करने के व्यावहारिक कदम

1. मन फिराओ: अपने पापों को स्वीकारो और उनसे दूर होने का निश्चय करो। यह ऐसा है जैसे स्नानागार में प्रवेश करने से पहले वस्त्र उतारना—जो नम्रता और समर्पण का प्रतीक है।

2. बपतिस्मा लो: पवित्र शास्त्र (यूहन्ना 3:23; प्रेरितों के काम 2:38) के अनुसार, यीशु मसीह के नाम से, पूर्ण डुबकी द्वारा बपतिस्मा लो।

जब यह किया जाता है, तो सभी पाप धो दिए जाते हैं और व्यक्ति परमेश्वर के सामने अब अशुद्ध नहीं रहता।

1 थिस्सलुनीकियों 4:7 (ESV):
“क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्धता के लिये नहीं, वरन् पवित्रता के लिये बुलाया है।”

इब्रानियों 10:10 (NIV):
“और उसी इच्छा के अनुसार हम यीशु मसीह के शरीर के एक बार दिए
गए बलिदान के द्वारा पवित्र किए गए हैं।”

आवाहन

क्या तुमने आज शुद्धिकरण के सोते में प्रवेश किया है? क्या तुम्हारे पाप धोए जा चुके हैं? यदि नहीं, तो अब किस बात की प्रतीक्षा है? मन फिराओ और यह प्रार्थना करो:

“हे प्रभु यीशु, मैं तेरे सामने एक पापी के रूप में आता हूँ। मैं अपने सब पापों से तौबा करता हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर और अपने वचन के अनुसार मुझे स्वीकार कर। मुझे एक पवित्र जीवन जीने में सहायता कर और मुझे अपने साथ चलने दे मेरे जीवन के सभी दिनों तक।

शुद्धिकरण का सोता: एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण

आमीन।”

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp